JETIR.ORG | ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनुसूचित जनजाति के युवाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन अलीराजपुर जिले के विशेष संदर्भ में

मनोज वास्केल
पीएच. डी. शोधार्थी (समाजकार्य)
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. आंबेडकर नगर, महू, जिला–इंदौर

सारांश :– उच्च शिक्षा विद्यार्थियों को विशेष ज्ञान और कौशल विकसित करने का मौका प्रदान करती है ताकि वे अपने अध्ययन क्षेत्र में गहरे ज्ञान और समझ प्राप्त कर सकें। आदिवासी क्षेत्रों में कक्षाओं, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और स्वच्छता सुविधाओं सहित उचित स्कूल बुनियादी ढाँचे का अभाव है, जो सीखने के माहौल में बाधा डालता है और अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को प्रभावित करता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति के युवाओं के लिए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न छात्रवृत्तियों के प्रति सोच सकारात्मक है। इनका लाभ प्राप्त कर ये युवा अपनी पढ़ाई पूरी करने में सफल हो रहे हैं एवं समाज की मुख्य धारा से जुड़ रह हैं।

कुंजी शब्द :– उच्च शिक्षा, चुनौतियां, आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, सामाजिक दबाव।

विषय प्रवेश :– उच्च शिक्षा, जिसे अंग्रेजी में ष्भ्पहीमत म्कनबंजपवदष कहा जाता है, वह शिक्षा है जो स्नातक, स्नातकोत्तर, और डॉक्टरेट जैसी उच्च शैक्षिक डिग्रियों की दिशा में दी जाती है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को विशेष ज्ञान और कौशल विकसित करने का मौका प्रदान करती है ताकि वे अपने अध्ययन क्षेत्र में गहरे ज्ञान और समझ प्राप्त कर सकें। उच्च शिक्षा कई रूपों में उपलब्ध होती है, जैसे कि महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, संस्थान, और अन्य शिक्षा संस्थानों के माध्यम आदि से। विभिन्न क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के अन्य प्रारूप भी हो सकते हैं, जैसे कि ऑनलाइन शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, और संविदानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम। उच्च शिक्षा विद्यार्थियों को उनके अध्ययन क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने का अवसर प्रदान करती है, और यह उनके करियर के विकास और व्यक्तिगत सफलता में मदद करती है।

उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रम होते हैं, जैसे कि कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, वैद्यकी, इंजीनियरिंग, कंप्यूटर विज्ञान, औद्योगिक डिजाइन, सामाजिक विज्ञान, और भौतिक शिक्षा, आदि। विद्यार्थी अपने रुचि और लक्ष्य के आधार पर उच्च शिक्षा के लिए विशेष क्षेत्र का चयन करते हैं और उन्हें विशेषज्ञता प्राप्त करने का मौका मिलता है। उच्च शिक्षा के कई लाभ होते हैं, जैसे कि व्यक्तिगत विकास, रोजगार के अवसरों

का बढ़ना, सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार, और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई और उच्च स्तरीय अनुसंधान की संभावना आदि।

अनुसूचित जनजाति की भागीदारी दर पिछले कुछ वर्षों से बढ़ रही है। उच्च शिक्षा में अन्तर पहुँच और भागीदारी देश में स्कूली शिक्षा तक असमान पहुँच को दर्शाती है। स्कूली शिक्षा क्षेत्र में, विशेष रूप से माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों पर उचित नीतिगत हस्तक्षेप के बिना, उच्च शिक्षा स्तर पर हस्तक्षेप करने का कोई फायदा नहीं होगा। 1990–91 से 2002–03 के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की भागीदारी में इसी तरह के रुझान देखे गए हैं। वर्तमान में, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति उच्च शिक्षा में लगभग 15 प्रतिशत भागीदारी दिखाते हैं, हालांकि विषयों में वितरण असमान रूप से फैला हुआ है। उच्च शिक्षा में कुल नामांकन में उनकी हिस्सेदारी पिछले कुछ वर्षों में लगातार बढ़ रही है

अनुसूचित जनजाति युवाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियाँ :– उच्च शिक्षा प्राप्त करने में होने वाली कुछ मुख्य चुनौतियाँ इस प्रकार हैं :–

1- शिक्षा के लिए सामाजिक समर्थन की कमी :– अनुसूचित जनजाति के युवाओं के पास अक्सर शिक्षा के लिए सामाजिक समर्थन की कमी होती है, जिससे उन्हें मानव संसाधन और मानव पूंजी के अधिकारिक उपयोग करने में मुश्किल होती है।

2- सामाजिक दबाव :– अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों सामाजिक दबाव का शिकार होने के कारण शिक्षा के अवसरों पर संकट आ जाता है। कई अनुसूचित जनजाति के युवा समाज में परंपरागत धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दबावों का सामना करते हैं, जिससे उनकी शिक्षा को नुकसान होता है।

3- आवश्यक सामग्री की कमी :– उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आवश्यक किताबें, कॉम्प्यूटर, इंटरनेट कनेक्शन, और अन्य सामग्री की कमी होती है। जिनके अभाव के कारण वे अपनी शिक्षा सही ढंग से पूर्ण नहीं कर पाते हैं।

4- आर्थिक समस्याएँ :– अनुसूचित जनजाति के युवाओं के पास आर्थिक संकट के कारण उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक वित्तीय संविदान करना मुश्किल होता है। सरकारी छात्रवृत्तियों और विशेष शिक्षा ऋणों का उपयोग करने के लिए उपयुक्त स्थिति और योजनाएं उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है।

5- वित्तीय समस्याएँ :– अनुसूचित जनजातियों के कई परिवार गरीब होते हैं और उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुंचने में अवरोध बनता है।

6- शिक्षा का अभाव :– अनुसूचित जनजाति के क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के लिए उपयुक्त संसाधनों की कमी होती है, जैसे कइ अनुसूचित जनजातियों के क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के उच्च स्तर के संस्थान नहीं होते हैं, जिसके कारण विद्यार्थियों को दूर के शहरों जाने की आवश्यकता होती है, जिससे उन्हें आवास, भोजन, और अन्य व्ययों की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

7- भाषा की कमजोरी :– उच्च शिक्षा के स्तर पर अकड़मिक अंग्रेजी का उपयोग किया जाता है, और कई अनुसूचित जनजाति के युवा इसमें कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं, क्योंकि उनकी मातृभाषा या स्थानीय भाषा इससे भिन्न होती है। इस समस्या का समाधान उच्च शिक्षा संस्थानों में अधिक भाषा विकल्पों को प्राथमिकता देने के माध्यम से किया जा सकता है।

8- शिक्षा संविधान में अधिकार :– अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए उनके संविधानिक अधिकार होते हैं, लेकिन इन अधिकारों के लिए लड़ाई करने और उन्हें पूरा करने के लिए उचित समर्थन और सुरक्षा प्राप्त नहीं हो पाती है।

9- विशेष योग्यता की अवश्यकता :– विशेष विषयों या विशेष योग्यता की आवश्यकता हो सकती है, जो अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध नहीं होती, और उन्हें उच्च शिक्षा के लिए तैयारी करने में मदद की नहीं हो पाती है।

इन चुनौतियों का समाधान सरकारी योजनाएं, शिक्षा संस्थानों की सदस्यता, सामाजिक संगठनों का समर्थन, और शिक्षा में सामाजिक समानता के प्रति जागरूकता के माध्यम से किया जा सकता है।

शोध के उद्देश्य :– अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं शैक्षणिक बाधाओं एवं चुनौतिओं का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना :– अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

शोध का चयन एवं महत्व :– भारत में शिक्षा की पहुंच में सुधार हुआ है, लेकिन कई जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता चिंता का विषय बनी हुई है। योग्य शिक्षकों की सीमित उपलब्धता, अपर्याप्त बुनियादी ढांचे और शिक्षण और सीखने के संसाधनों की कमी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है, जो उनके समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन और संभावनाओं में बाधा बनती है। हाल के वर्षों में स्कूलों में अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की नामांकन दर में काफी वृद्धि हुई है। शिक्षा को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों और आरक्षण नीति ने पहुँच बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, अनुसूचित जनजाति और गैर–अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों के बीच नामांकन में अभी भी असमानताएं हैं, खासकर दूरदराज और आदिवासी क्षेत्रों में। कई आदिवासी क्षेत्रों में कक्षाओं, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं आर स्वच्छता सुविधाओं सहित उचित स्कूल बुनियादी ढाँचे का अभाव है, जो सीखने के माहौल में बाधा डालता है और अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को प्रभावित करता है। सरकार इन क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए काम कर रही है, लेकिन प्रगति धीरे–धीरे हो रही है। आज स्थिति यह है कि सिर्फ वही माता पिता अपने बच्चों को माध्यमिक शिक्षा के बाद महाविद्यालय भेज पाते हैं जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं। इसलिए भी इस शोध समस्या का चयन एवं महत्व बड़ जाता है।

शोध विधि :– शोध विधि का उपयोग शोध अध्ययन की परिशुद्धता के लिए तथा सत्यता के करीब पहुंचने के लिए अति आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए विश्लेषात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के अनुसूचित जनजाति बाहुल्य जिले अलीराजपुर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में उद्देश्यपूर्ण विधि के द्वारा चयनित किया गया।

अध्ययन का समग्र :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के अनुसूचित जनजाति बाहुल्य जिले अलीराजपुर में निवासरत् अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे समस्त युवाओं को अध्यन के समग्र के रूप में सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन की इकाई :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के अनुसूचित जनजाति बाहुल्य जिले अलीराजपुर में निवासरत् अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे चयनित युवा को अध्ययन की इकाई के रूप में सम्मिलित किया गया है।

निदर्शन विधि :– प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत उच्च शिक्षा में अध्ययन करने वाले अनुसूचित जनजाति के युवाओं को सुविधानुसार स्तरीकृत निदर्शन विधि के आधार पर चयनित किया गया है। अध्ययन हेतु अलीराजपुर जिले से 400 युवाओं का चयन उत्तरदाताओं के रूप में किया गया है।

उत्तरदाताओं का चयन :– उत्तरदाताओं के चयन का विवरण अग्र तालिका में प्रस्तुत किया गया है :–

तालिका क्र. 1

अलीराजपुर जिले में उत्तरदाताओं का चयन

क्र.	महाविद्यालय का नाम	विद्यार्थियों की संख्या
1.	क्रांतिकारी शहीद छीतू सिंह शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अलीराजपुर	80
2.	मां नर्मदा शासकीय महाविद्यालय सोंडवा	80
3.	शासकीय महाविद्यालय जोबट	80
4.	शासकीय महाविद्यालय भावरा	80
5.	शासकीय विधि महाविद्यालय अलीराजपुर	80
	कुल योग	400

मध्य प्रदेश के अलीराजपुर जिले में कुल पाँच शासकीय महाविद्यालय यथा क्रांतिकारी शहीद छीतू सिंह शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अलीराजपुर, मां नर्मदा शासकीय महाविद्यालय सोंडवा, शासकीय महाविद्यालय जोबट, शासकीय महाविद्यालय भावरा एवं शासकीय विधि महाविद्यालय अलीराजपुर हैं। प्रत्येक महाविद्यालय से 80 विद्यार्थी, इसी प्रकार 5 महाविद्यालयों में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों को स्तरीकृत निदर्शन विधि का प्रयोग कर चयन किया गया।

आँकडे एकत्रित करने के स्त्रोत :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक आँकड़े :– प्राथमिक आँकड़ों का सग्रहण निर्मित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र में जाकर उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क कर साक्षात्कार कर, क्षेत्र का निरीक्षण एवं अवलोकन तथा समुह चर्चा के माध्यम से एकत्र किये गये। साक्षात्कार अनुसूची में अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप प्रश्नों का समावेश किया गया।

द्वितीयक आँकड :– द्वितीयक स्त्रोतों के अन्तर्गत विद्वानों द्वारा लिखित ग्रन्थ, सर्वेक्षण प्रतिवेदन, ऐतिहासिक प्रलेख, समाचार पत्र, पत्रिका, शोध पत्रिका, संबंधित सरकारी विभागों की वार्षिक प्रतिवेदन तथा इन्टरनेट तथा लेखा–जोखा का विवरण अन्य अप्रकाशित सामग्री आदि सभी माध्यमों का उपयोग किया गया। इसके अतिरिक्त अनुसूचित जनजाति विभाग, आदिम जाति कल्याण विभाग, जिला सांख्यिकी कार्यालय, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, (महू) इन्दौर, से द्वितीयक स्त्रोत एकत्रित किये गये।

तकनीक एवं उपकरण :– संमक एकत्रित करने हेतु अवलोकन पद्धति, समूह चर्चा, अनुसूची, साक्षात्कार पद्धति, अनौपचारिक वार्तालाप एवं एस. पी. एस. एस. का उपयोग किया गया है।

विश्लेषणात्मक पृष्ठभूमि :– आँकड़ों का संकलन के पश्चात्, संग्रहित आँकड़ों की छंटनी करके, कम्प्यूटर में प्रविष्ट किया गया तथा एस.पी. एस. एस. पैकेज का प्रयोग करते हुऐ सारणीयन के पश्चात् विश्लेषण करके उपयुक्त निष्कर्ष निकाले गये है।

अध्ययन के परिणाम : – आंकड़े एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया था और 400 (महिला 186, पुरुष 214) अनुसूचित जनजाति के युवाओं (विद्यार्थियों) से आकड़े एकत्र किए गए। जिसमें पांच बिंदु लिकर्ट स्केल यानी दृढ़तापूर्वक सहमत, सहमत, तटस्थ, असहमत, दृढ़तापूर्वक असहमत को मानकीकृत किया गया है।

अनुसूचित जनजाति के युवाओं के मानकीकृत पैमानों के माध्यम से एकत्र की गई प्रतिक्रियाओं को स्कोरिंग योजना के अनुसार स्कोर किया गया और फिर आंकडों को एसपीएसएस में दर्ज किया गया। एसपीएसएस में दिए गए सांख्यिकीय उपकरण डेटा के विश्लेषण और ग्राफिकल प्रस्तुति के लिए लागू किए गए थे।

सारणीकरण के बाद डेटा का विश्लेषण तालिका की पंक्ति में किया गया और प्रारूप में व्याख्या की गई। आंकडों की व्याख्या के बाद तैयार की गई परिकल्पनाओं का नए सिरे से परीक्षण किया गया। डेटा का विश्लेषण वन–वे एनोवा के द्वारा किया गया है।

लिकर्ट स्केल आम तौर पर पाँच से सात निश्चित–विकल्प विकल्पों की एक निरंतरता या श्रृंखला प्रदान करते हैं। यह लोगों को स्वयं रिपोर्ट करने में सक्षम बनाता है कि वे किसी दिए गए प्रस्ताव से किस हद तक सहमत या असहमत हैं। परिणामस्वरूप, लिकर्ट स्केल एक साधारण बाइनरी प्रतिक्रिया, जैसे हाँ या नहीं, की तुलना में अधिक बारीकियों की अनुमति देता है। 5 सर्वोत्तम दृढ़तापूर्वक सहमत है, और इसका मतलब है कि यह प्रतिभा अधिग्रहण की दिशा में योग्यता पैरामीटर के रूप में अधिक महत्व रखता है। लिकर्ट स्केल में प्रत्येक आइटम के लिए माध्य और अधिकतम और न्यूनतम सीमाएं एकत्र की जाती हैं।

परिकल्पना : अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

''अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है'', परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए ;थ जमेजद्ध एफ परीक्षण का उपयोग कर ;।छव्ट।द्ध प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। वर्तमान अध्ययन में लिंग की दो श्रेणियों यथा पुरुष एवं महिला में विभक्त किया गया।

प्रस्तुत विश्लेषण के लिए विभिन्न आंकड़ों समूहों में प्रसरण के अन्तर को दो वर्गों प्रथम प्रतिदर्शों के मध्य प्रसरण एवं द्वितीय प्रतिदर्शों के अर्न्तगत प्रसरण में बाँटकर, प्रसरण अनुपात ज्ञात किया गया।

लिंग की दो श्रेणियों के आधार पर उत्तरदाताओं के औसत आंकड़े प्राप्त करने के लिए मानक विचलन मान प्राप्त किया गया। ;थ जमेजद्ध एफ परीक्षण की गणना के आधार पर गणित परिणाम अग्र तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं :–

तालिका 4.2

।छव्ट। प्रसरण विश्लेषण – अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियां

शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाएँ एवं चुनौतियां	लिंग	छ	डमंद	जक. क्मअपंजपवद	थ	पहण
अनुसूचित जनजातियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समान अवसर प्राप्त हैं	पुरुष	214	2.65	.727	418.909	.000
	महिला	186	1.37	.483		
	कुल	400	2.05	.895		
सब कुछ स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए अपनी मातृभाषा में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता ह	पुरुष	214	2.48	.809	5.005	.026
	महिला	186	2.74	1.502		
	कुल	400	2.60	1.189		
अनुसूचित जनजातियों को उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने में समस्या का सामना करना पड़ता है	पुरुष	214	3.00	1.441	113.488	.000
	महिला	186	1.65	1.036		
	कुल	400	2.37	1.436		
शिक्षा एक ऐसी चीज है जो मानव जीवन को आकार दे सकती है	पुरुष	214	2.62	1.131	.019	.009
	महिला	186	2.63	1.416		
	कुल	400	2.63	1.270		
जब कोई समस्या होती है, तो सबसे पहले यह पता लगाता हूँ कि वास्तव में समस्या क्या है	पुरुष	214	2.52	.958	178.823	.000
	महिला	186	1.48	.501		
	कुल	400	2.04	.937		
कम उम्र में विवाह की प्रथा उच्च शिक्षा में बाधक	पुरुष	214	1.99	.850	61.546	.000
	महिला	186	2.91	1.461		
	कुल	400	2.42	1.260		
नकारात्मक प्रभाव डालने वाली जल्दी विवाह प्रणाली का विरोध करता हूँ	पुरुष	214	2.79	1.320	69.510	.000
	महिला	186	1.87	.788		
	कुल	400	2.37	1.196		
बीपीएल श्रेणी में होने के कारण परिवार और शैक्षिक खर्चों का प्रबंध करने में असक्षम	पुरुष	214	3.01	1.252	76.561	.000
	महिला	186	2.13	.601		
	कुल	400	2.60	1.095		
महाविद्यालय घर से दूर होने के कारण परिवहन व्यय वहन करने में समस्या	पुरुष	214	3.01	1.175	29.434	.000
	महिला	186	2.24	1.660		
	कुल	400	2.65	1.471		
शिक्षकों की शिक्षण पद्धति समझ में नहीं आना	पुरुष	214	3.13	1.514	9.421	.002
	महिला	186	2.69	1.306		
	कुल	400	2.93	1.436		

प्रसरण विश्लेषण की गणना के आधार पर अनुसूचित जनजातियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समान अवसर प्राप्त हैं का मान (.000), सब कुछ स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए अपनी मातृभाषा में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है का मान (.026), अनुसूचित जनजातियों को उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने में समस्या का सामना करना पड़ता है का मान (.000), शिक्षा एक ऐसी चीज है जो मानव जीवन को आकार दे सकती है का मान (.009), जब कोई समस्या होती है, तो सबसे पहले यह पता लगाता हूँ कि वास्तव में समस्या क्या है का मान (.000), कम उम्र में विवाह की प्रथा उच्च शिक्षा में बाधक का मान (.000), नकारात्मक प्रभाव डालने वाली जल्दी विवाह प्रणाली का विरोध करता हूँ का मान (.000), बीपीएल श्रेणी में होने के कारण परिवार और शैक्षिक खर्चों का प्रबंध करने में असक्षम का मान (.000), प्राप्त हुआ, महाविद्यालय घर से दूर होने के कारण परिवहन व्यय वहन करने में समस्या का मान (.000), शिक्षकों की शिक्षण पद्धति समझ में नहीं आना का मान (.002) मान प्राप्त हुआ।

तालिका 4.2

।छव्ट। प्रसरण विश्लेषण – अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियां

शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाएँ एवं चुनौतियां	लिंग	छ	डमंद	जक. क्मअपंजपवद	श	पहण
शिक्षक स्वभाव से आक्रामक होने के कारण अध्ययन में सहायक नहीं होते हैं	पुरुष	214	3.07	1.032	212.808	.000
	महिला	186	1.70	.815		
	कुल	400	2.44	1.160		
महाविद्यालय स्तर पर अंग्रेजी माध्यम अनिवार्य होने के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भाषा की बाधा	पुरुष	214	2.52	.928	8.784	.003
	महिला	186	2.83	1.162		
	कुल	400	2.67	1.053		
विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बाधा	पुरुष	214	2.15	.787	2.817	.049
	महिला	186	2.32	1.201		
	कुल	400	2.23	1.003		
महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया, मोबाइल गेम्स, अत्यधिक बातचीत और टेक्स्टिंग के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बाधा	पुरुष	214	2.98	1.336	83.362	.000
	महिला	186	1.90	.965		
	कुल	400	2.48	1.294		
गुणवान शिक्षकों की कमी के कारण कुशल व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पा रहा है।	पुरुष	214	2.95	1.417	9.358	.002
	महिला	186	2.55	1.158		
	कुल	400	2.77	1.316		
नामांकित होने और उच्च अध्ययन करने के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों की कमी है।	पुरुष	214	3.13	1.575	30.776	.000
	महिला	186	2.41	.879		
	कुल	400	2.80	1.346		
महाविद्यालय में उपलब्ध विभिन्न विषयों की पुस्तकों के साथ पुस्तकालय संसाधनों से संतुष्ट	महिला	186	2.41	.879	6.605	.011
	कुल	400	2.80	1.346		
	कुल	400	2.82	1.241		
महाविद्यालय में शौचालय और पीने के पानी की सुविधा होने के कारण स्वच्छ जीवन	पुरुष	214	2.78	1.148	305.602	.000
	महिला	186	1.23	.419		
	कुल	400	2.06	1.178		
शैक्षिक प्रौद्योगिकी, आविष्कारों और नवाचारों का दुरुपयोग किया जा रहा ह	पुरुष	214	3.60	1.270	16.716	.000
	महिला	186	3.01	1.601		
	कुल	400	3.33	1.461		
विषम शिक्षा प्रणाली के कारण अनुसूचित जनजातियों का विकास नहीं हो पा रहा है	पुरुष	214	3.11	1.516	4.379	.037
	महिला	186	2.81	1.328		

	कुल	400	2.97	1.438		
कोई परियोजना आधारित शिक्षा और रणनीति नहीं है	पुरुष	214	3.17	1.526	.443	.065
	महिला	186	3.26	1.104		
	कुल	400	3.21	1.346		
क्षेत्र में कोई उचित मूल्य शिक्षा नहीं है	पुरुष	214	3.35	1.555	5.792	.017
	महिला	186	2.97	1.575		
	कुल	400	3.18	1.573		

प्रसरण विश्लेषण की गणना के आधार पर शिक्षक स्वभाव से आक्रामक होने के कारण अध्ययन में सहायक नहीं होते हैं का मान (.000), महाविद्यालय स्तर पर अंग्रेजी माध्यम अनिवार्य होने के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भाषा की बाधा का मान (.003), विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बाधा का मान (.049), महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया, मोबाइल गेम्स, अत्यधिक बातचीत और टेक्स्टिंग के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बाधा का मान (.000), एवं गुणवान शिक्षकों की कमी के कारण कुशल व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पा रहा है का मान (.002), प्राप्त हुआ। प्रसरण विश्लेषण की गणना के आधार पर नामांकित होने और उच्च अध्ययन करने के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों की कमी है का मान (.000), महाविद्यालय में उपलब्ध विभिन्न विषयों की पुस्तकों के साथ पुस्तकालय संसाधनों से संतुष्ट महसूस करता हूँ का मान (.011), महाविद्यालय में शौचालय और पीने के पानी की सुविधा होने के कारण स्वच्छ जीवन बनाए रख सकते हैं का मान (.000), शैक्षिक प्रौद्योगिकी, आविष्कारों और नवाचारों का दुरुपयोग किया जा रहा है का मान (.000), विषम शिक्षा प्रणाली के कारण अनुसूचित जनजातियों का विकास नहीं हो पा रहा है का मान (.037), कोई परियोजना आधारित शिक्षा और रणनीति नहीं है का मान (.065), एवं क्षेत्र में कोई उचित मूल्य शिक्षा नहीं है का मान (.017) प्राप्त हुआ।

तालिका 4.2

।छ्व्ट। प्रसरण विश्लेषण – अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियां

शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाएँ एवं चुनौतियां	लिंग	छ	डमंद	जक. क्मअपंजपवद	ध्	पहण
उच्च शिक्षा से गलत सामाजिक दृष्टिकोण पनप रहा है	पुरुष	214	3.26	1.412	72. 354	.000
	महिला	186	2.14	1.182		
	कुल	400	2.74	1.423		
उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण संस्थानों की कमी है	पुरुष	214	3.36	1.362	62. 621	.000
	महिला	186	2.33	1.198		
	कुल	400	2.88	1.384		
उच्च शिक्षा में बुनियादी ढाँचे की कमी है	पुरुष	214	3.10	1.510	24. 127	.000
	महिला	186	2.47	.976		
	कुल	400	2.81	1.327		
उच्च शिक्षा सीखने की तकनीकों का उपयोग करना सिखाया जाता है	पुरुष	214	3.09	1.292	68. 691	.000
	महिला	186	2.08	1.132		
	कुल	400	2.62	1.319		
मुझे लगता है कि हमारे महाविद्यालय में उचित कक्षा और बैठने की व्यवस्था है	पुरुष	214	2.81	1.246	149. 743	.000
	महिला	186	1.62	.486		
	कुल	400	2.26	1.136		
मेरा मानना है कि मौजूदा पाठ्यक्रम सभी भारतीय विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है	पुरुष	214	2.70	1.243	5.980	.015
	महिला	186	3.01	1.241		

	कुल	400	2.84	1.250		
शिक्षकों के शिक्षण और विद्यार्थियों के कौशल व्यक्तित्व निर्माण में निर्धारक होते हैं	पुरुष	214	3.04	1.337	107.502	.000
	महिला	186	1.88	.790		
	कुल	400	2.50	1.257		
मेरा मानना है कि बेरोजगारी जीवन की सबसे बड़ी समस्या है	पुरुष	214	3.50	1.638	66.598	.000
	महिला	186	2.41	.879		
	कुल	400	3.00	1.446		
अनेक समस्याओं के कारण विद्यार्थी महाविद्यालय छोड़ देते हैं	पुरुष	214	3.75	1.782	56.574	.000
	महिला	186	2.64	.994		
	कुल	400	3.23	1.568		
विद्यार्थी स्वयं मजदूरी करते हैं इसलिए वे महाविद्यालय आते नहीं हैं या आना छोड़ देते हैं	पुरुष	214	3.39	1.298	89.136	.000
	महिला	186	2.39	.698		
	कुल	400	2.93	1.174		

प्रसरण विश्लेषण की गणना के आधार पर अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतिओं में उच्च शिक्षा से गलत सामाजिक दृष्टिकोण पनप रहा है का मान (.000), उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण संस्थानों की कमी है का मान (.000), उच्च शिक्षा में बुनियादी ढाँचे की कमी है का मान (.000), उच्च शिक्षा सीखने की तकनीकों का उपयोग करना सिखाया जाता है का मान (.000), मुझे लगता है कि हमारे महाविद्यालय में उचित कक्षा और बैठने की व्यवस्था है का मान (.000), मेरा मानना है कि मौजूदा पाठ्यक्रम सभी भारतीय विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है का मान (.015), शिक्षकों के शिक्षण और विद्यार्थियों के कौशल व्यक्तित्व निर्माण में निर्धारक होते हैं का मान (.000), मेरा मानना है कि बेरोजगारी जीवन की सबसे बड़ी समस्या है का मान (.000), अनेक समस्याओं के कारण विद्यार्थी महाविद्यालय छोड़ देते हैं का मान (.000), विद्यार्थी स्वयं मजदूरी करते हैं इसलिए वे महाविद्यालय आते नहीं हैं या आना छोड़ देते हैं का मान (.000) प्राप्त हुआ। चूँकि प्रसरण विश्लेषण की गणना के आधार प्राप्त च मान 0.05 से कम है इसलिए 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना ''अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है'', अस्वीकार की जाती है।

अतः स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियों का कम करने के लिए शासकीय स्तर पर अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ये युवा अपने शैक्षणिक विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति के युवाओं के लिए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न छात्रवृत्तियों के प्रति सोच सकारात्मक है। इनका लाभ प्राप्त कर ये युवा अपनी पढ़ाई पूरी करने में सफल हो रहे हैं एवं समाज की मुख्य धारा से जुड़ रह हैं। अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के युवाओं के लिए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न छात्रवृत्तियों को प्राप्त करने में अनेक प्रकार से मदद मिलती है। अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के कौशल विकास में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका सकारात्मक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से अनुसूचित जनजाति के युवा नए–नए कौशल सीख रहे हैं साथ समाज के साथ जुड़ाव, समाज की समस्याओं के बारे में

जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं के शैक्षणिक विकास में अनेक बाधाओं एवं चुनौतियों को कम करने के लिए शासकीय स्तर पर अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ये युवा अपने शैक्षणिक विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उच्च शिक्षा का अनुसूचित जनजाति के युवाओं के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान समय में अनेक योजनाओं एवं जागरुकता कार्यक्रमों के माध्यमों से अनुसूचित जनजाति के युवा उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। वे अपने आने वाली पीढ़ी को उच्च शिक्षा के प्रति जागरुक कर रह हैं। वे रोजगार के नए–नए अवसरों की तलाश कर रहे हैं एवं स्वरोजगार की ओर अग्रसर हो रहे हैं। निश्चित ही उच्च शिक्षा अनुसूचित जाति के युवाओं के जीवन में परिवर्तनकारी सिद्ध हो रही है।

सन्दर्भ

1. राठौर, अजय सिंह (1994), ''भील जनजाति शिक्षा और आधुनिकीकरण'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
2. अटल, योगेश एवं सिसोदिया, यतीन्द्रसिंह (2011), ''आदिवासी भारत'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
3. बया, विकास (2015), ''जनजातीय विकास'' क्लासिफल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
4. रावत, हरिकृष्ण (2016), ''मानवशास्त्र विश्वकोश'', रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
5. मीणा, जनक सिंह एवं कुलदीप सिंह (2017), ''भारत के आदिवासी चुनौतियां एवं सम्भावनाएं'', वाणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. एक्का, भिनसेंट, एवं कुमार, अरूण (2019), ''संघर्षरत आदिवासी समाज'', भारतीय सामाजिक संस्थान, नई दिल्ली।
7. वर्मा ,बबीता एवं खेर, मनीष (2021), ''भारत में शिक्षा नीति की दशा और दिशा'' श्री विनायक पब्लिकेशन, आगरा।
8. पत्रिका शोध ऋतु, अक्टूबर–दिसम्बर, (2021), नव साहित्यकार पब्लिकेशन, नांदेड–महाराष्ट्र।
9. पनरवाना, के., एवं गिल, ए. एस. (2020), ''पहुँच और समावेशन से परे ग्रामीण पंजाब में उच्च शिक्षा में भागीदारी के दलित अनुभव'', दलित की समकालीन आवाज, 12 (2)।
10. बोंडा जनजाति और उच्च शिक्षाः ओडिशा में एक केस स्टडी, अगस्त (2022) एजुकेशनल क्वेस्ट– एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड एप्लाइड सोशल साइंसेज 13(2), 159–165
11. भोई, डी. (2022) ''अनुसूचित जातियों का आर्थिक विकास और शिक्षाः नवउदारवादी युग से खींची गई रेखा'', दलित की समसामयिक आवाज।
12- Chakrabarti, A. (2009), "Determinants of Participation in Higher Education and Choice of Disciplines: Evidence from Urban and Rural Indian Youth", *South Asia Economic Journal*, *10*(2), 371-402.